Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

भक्ति साहित्य में विश्वबंधुत्व की भावना : विशेष कवि संतकबीर

डॉ. बिक्कड अभिमन्यु सदाशिव

विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
राष्ट्रमाता इंदिरागांधी कला वाणिज्य
व विज्ञान महाविद्यालय जालना.
मो. नं. 9421307706

महाराष्ट्र में 12 वी शताबदी में ज्ञानेश्वर नामक संत हुए। उन्होंने अपने भक्तिसाहित्य द्वारा ईश्वर से विश्वकल्यान की कामना की है।

"आता विश्वात्मके। देवे।

येणे वाग्यजें तोषावे। तोषोणि मज द्यावे।

पसायदान हें। 1793।।"

ज्ञानेश्वरी हिन्दी का भक्तिकालिन साहित्य भी इसी भावभूमि पर निर्मित है। सन 1300–1400 से आरंभ हिन्दी भक्ति साहित्य समृध्द साहित्य है। जिसमें विश्व बंधुत्व की भावना कुट–कुटकर भरी है। भक्ति कालीन साहित्यकारोंने अपने साहित्य में विश्व बंधुत्व की भावना को प्रस्तुत किया है। उनका समग्रह साहित्य विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है।

इस काल की राजनीतिक परिस्थिति ठीक नहीं थी। चारों ओर युध्दजन्य परिस्थिति दिखाई देती थी। विदेशियों के आक्रमण छोटे– छोटे संस्थानों के आपसी झगडे दिखाई देते थे। शासन की बागडोर क्रूर विलासी, अन्यायी, धर्मांध शासकों के हाथों में थी। इसी शासनकाल में मनुष्य का जीवन भयभित था। हिन्दु मुसलमान आपस में लडते थे। दोनों जातीयों में धर्मांतर हो रहा था। जाती पाती के बंधनों से समाज जर्जर हो रहा था। भक्ति काल में अंधविश्वास, कुप्रथाएँ, आडंबरता, ढोंग, मिथ्या का बोलबाला था। इन परिस्थितियों में सामान्य जनों की मनः स्थिति ठीक नहीं थी। गरीब लोग ईश्वर की भक्ति में जुटे थे। कबीर ने अपने दोहे, पद, साखी, के माध्यम से विश्वबंधुत्व, शांती प्रेम सद्भावना अहिंसा को वाणी दी। कबीर मूलतः निरक्षर थे। वे स्वयं कहते हैं –

"मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहिं नहिं हाथ।"

कबीर ने कहा है कि पढ़लिखर कोई पंडित नहीं बनता देखे–

"पोथी पढ़ पढ़ जग पंडित भया न कोई।
एकै आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई।।"[8]

यहॉ कबीर प्रेम की बात करते हैं। संसार में प्रेम ही सब कुछ है। प्रेम ही एक ऐसा तत्व है जो हमे मनुष्य के निकट ले जा सकता है। परंतु हर आदमी के लिए प्रेमतत्व सरल नहीं ऐसा कबीर कहते हैं। देखे –

"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस खतारै, भुंइ धरै, सो पैठे घर माहिं।।
प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिता दहे।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय।।
प्रेम काबारी उपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा, जेहि रुचै, सीस देइ लै जाइ।। (क.ग्रं.)

संसार में जिस मनुष्य के ऱ्हदय में प्रेम नहीं रहता वह शमशान की तरह है। वह इस प्रकार से –

"जा घर प्रेम न संचरै, सौ घर जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान।। (क.ग्रं.)

कबीर ने हिन्दु मुसलमान दोनों को भी फटकारा है – वह इस प्रकार से –

हिन्दुन की हिंदुआई देखी तुरकन की तुरकाई।
अरे इन दोऊन राहन भाई।''
ज्यो तू ब्रह्मनी जाया।
तो आन बाट से क्यों न आया।'' (क.ग्रं.)

कबीर एक संसार को बाजार मानते हैं।

"यह संसार हाट करि जान, सबको वणी जन आया।
चेती सकै सो चेतौरे भाई, मुरखि भूल गवाया।। (क.ग्र.)

यह संसार एक बाजार है, यहॉ पर सभी लोग वाणिज्य करते आये है। यहॉ तो लोग केवल व्यापार रकने आये है। इस संसार में जन्म मरण का क्रम चलता ही रहेगा।

कबीर के शब्दों मे ईश्वर का अस्तित्व देखे –

"मोकौ कहा ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।

न मैं देवल न मैं मस्जिद, ना काबे कैलाश में।

न तो कौन क्रिया कर्म में नहिं रोग वैराग में।

खोजी होय तो तुरतै मिलि हो पलभर की तलाश में।

कहै कबीर सुनो, भाई साधो, सब सांसन की सांस में।"(क.ग्र.)

कबीर की खण्डाात्मक प्रवृत्ति आडंबरता पर सीधा प्रहार करती है –

"पत्थर पूजन हरि मिले तो मैं पूजू पहार।

ताते ये चाकी भली पीस खाय संसार।।" (क.ग्र.)

इस तरह हिन्दु मुसलमान दोनों धर्म के लोगों की खबर लेते हैं। और उनमें ईश्वर एक है हम सब एक है। एकता की भावना निर्माण करते हैं। कबीर के विचारों में सब एक समान है। वह इस प्रकार से –

"एकै रुधिर एकै मल भूतर, एक चाम एक गुदा।

एकै बूंद तै सृष्टि रची है, कौन ब्राह्मा सूदा।।" (क.ग्र.)

यहॉ कबीर ने आदमी और आदमी के बीच भेद को कबीर बता देते हैं। इंसानियत से बढ़कर कुछ नहीं है। कबीर ने हर धर्म दिखावटी, ढोंग और आडंबर का कडा विरोध किया है। कबीर मानव में ही प्रभूत के दर्शन करते हैं। उनके लिए ईश्वर ही मानव है और मानव ही ईश्वर है।

उपसंहार

उपसंहार के रुप में कबीर के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मानतावादी विचार भक्तिकालीन साहित्य में विश्व बंधुत्व की भावनाओं से ओतप्रोत है। उनके प्रत्येक दोहा पद, साखी अपने आप में एक मिसाल है। उनके दोहों में न केवल भारत के हिन्दु मुसलमान की धार्मिक सामाजिक, आडंबरता, ढोंग आदि पर व्यंग्य है। बल्कि समस्त संसार के जहॉ

जहॉ मानव जाति है उनके धर्म के लिए भी लागू पडता है। विश्वबंधुत्व की भावना उनके साहित्य में कुट–कुटकर भरी है। उनका यह दोहा –

"मेरा मुझ में किछु नहिं, जो किछु है सो तेरा।
तेरा तुझको सौपता क्या लागे है मेरा।।" (क.ग्र.)

यहा पूर्णतः ईश्वर को समर्पण का भाव है। संसार नश्वर है। इस धर्तीपर जो भी आया है उसे एक न एक दिन जाना ही है। फिर भी काहे का लोभ मोह, माया ईर्षा, द्वेष, विरोध, भेदभाव, अमानवियता, आडंबरता, सब कुछ मंजुर है। केवळ शाश्वत तो प्रेम है।

संदर्भ सहायक ग्रंथ –

1) कबीर ग्रंथावली : लेखक डॉ. एल.बी. राम अनंत
2) संतों की सांस्कृतिक संस्पृति : डॉ. रामराजन पाण्डेय
3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. श्रीनिवास शर्मा
4) भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का पुर्नमूल्यांकन संपादक डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी, प्रा. लताशि शिरोडकर